हिंदी भाषा और ई-शिक्षा

डॉ लीना गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी

हिंदी भाषा का फलक विराट एवं अपरिमेय है। हम सभी जानते हैं कि हिंदी हमारी मातृभाषा है जो माता के दाय के रूप में हमें मिलती है। उसे मातृभाषा कहते है। हमें गौरव है कि यह पदवी और उपाधि हिंदी को प्राप्त है। कवि गुरु गुरुदेव श्री रविंद्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर शब्दों में कहा था कि -

'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की राजभाषा, संपर्क भाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की भूमिका भारत के बढ़ते कद के साथ निरंतर समृद्ध हो रही है। हिंदी भाषा की जीवंतता का रहस्य उसकी व्यापकता में निहित है। विश्व भर में स्थित कोई भी भारतीय या तो हिंदी या अपनी मातृभाषा में ही सोचता समझता और बोलता है और वह हिंदी से किसी न किसी रूप में जरूर परिचित है।1 हिंदी एवं भारतीय संस्कृति विदेशों में रहने वाले भारतीय भी अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति से जोड़ना चाहते हैं। उनके लिए सबसे बड़ा आधार हिंदी ही है। इसका अन्य कारण उदारीकरण तथा निजीकरण भी है। अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते व्यापारिक संबंधों ने एक दूसरे के देशों की भाषाओं को सीने की आवश्यकता को और भी अधिक बढ़ा दिया है। तकनीकी रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि हिंदी भाषा अपनी लिपि और उच्चारण में सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। इसलिए वैश्विक स्तर पर कई देशों ने भारतीय अध्ययनों को बढ़ावा देते हुए अपने देशों में हिंदी सिाने के लिए अनेक संस्थान स्थापित किए हैं। विश्व के 40 से अधिक देशों में 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी की शिक्षा दी जा रही है। दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका हो या रूसी विद्वान या फिर एशियाई देश जापान आदि विभिन्न देशों में हिंदी भाषा को विशेष सम्मान प्राप्त है। इन देशों का भारतीय भाषा हिंदी से जुड़ना स्पष्ट करता है कि वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्व की भाषा कहलाएगी

वर्तमान युग तकनीक का युग है। शिक्षा में तकनीक का प्रयोग ई शिक्षा कहलाता है जिसे ई लर्निंग के नाम से जाना जाता है। हमारे आस पास के वातावरण में देखें तो हमारे आसपास ई-शिक्षा के कितने ही साधन उपलब्ध हैं जैसे मोबाइल फोन, कंप्यूटर, स्मार्ट क्लास, पोर्टल, वेबसाइट इत्यादि कौन होगा जो इन माध्यमों को नहीं जानता या प्रयोग नहीं करता। शायद आज की दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति इन साधनों के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर रहा है। यहां तक कि शैशव अवस्था से ही यह सभी माध्यम एक बालक के जीवन में खिलौने के रूप में आकर उसका ज्ञान वर्धन कर रहे हैं ई - शिक्षा के यह सभी साधन उसके खिलौने पुस्तके, गुरुकुल, विद्यालय माता पिता की भूमिका निभा रहे हैं। यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि आज की दुनिया यही है। तथा आज की जरूरत भी। इसलिए हमें वर्तमान में इन्हें अपनाना ही होगा।

यदि हम शिक्षा देने या ग्रहण करने में इन्हें नहीं अपनाएंगे तो हम आधुनिकता की दौड़ में पिछड़ जाएंगे। इसलिए हमें तकनीक से जुड़ना होगा ई -शिक्षा को अपनाना होगा। हमें इस तकनीक को अपनाने में संकोच भी नहीं करना चाहिए क्योंकि यह तकनीक हमारी शिक्षा को रोचक एवं प्रभावशाली बनाती है। ई शिक्षा का संबंध दृश्य श्रव्य तकनीक से जुड़ा हुआ है देखकर और सुनकर प्राप्त शिक्षा व्यक्ति के मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ती है हमारे पास दृश्य श्रव्य तकनीक के अनेक साधन उपलब्ध है जैसे पीपीटी श्रव्य रिकॉर्डिंग, चलचित्र, रिकॉर्डिंग, प्रवाह सचित्र, टंकण सामग्री स इन्हीं के प्रयोग से शिक्षा शाश्वत बनती है। विश्लेषण करना आसान हो जाता है।

हिंदी भाषा में ई -शिक्षा का प्रयोग हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है इसी तकनीक के कारण वर्तमान में वेब, मीडिया, विज्ञापन संगीत बाजार कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा जहां हिंदी अब अपने पांव न पसार रही हो। विदेशी लोग भी हिंदी सीने के लिए अपने-अपने देशों में ई - शिक्षण के प्रयोग पर जोर लगा रहे हैं।

कहा जाता है कि इंटरनेट पर हिंदी का पहला प्रकाशन 1996 से प्रकाशित हो रहा है। 1997 में जब इसका वेब संस्करण उपलब्ध

ISBN: 978-81-954645-0-0

कराया गया तब यह इंटरनेट पर विश्व का पहला हिंदी प्रकाशन कहलाया। 2

दिलचस्प बात यह है कि सन 2000 तक भारत से हिंदी वेब प्रकाशन ना होकर न्यूजीलैंड अमेरिका से प्रकाशन हुआ। यह कहा जा सकता है कि हिंदी वेबसाइट विदेश से आरंभ हुई तथा अब यह भारत में भी लोकप्रिय हो रही है। इस प्रकार गूगल ने भी हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ई शिक्षा की नवीन प्रणालियां शैक्षणिक संस्थानों में विशेषतया विदेशी -भाषा साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन ला रही है। आधुनिक तकनीकी प्रगति तथा बढ़ती प्रौद्योगिकी के अनुकूल हिंदी भाषा साहित्य के वास्तविक स्वरूप तथा सूक्ष्म तत्वों और आकर्षक पहलुओं को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने में अत्यंत सफलता भी प्राप्त हो रही है। इसके फलस्वरूप शिक्षा संस्थानों में हिंदी भाषा साहित्य का पठन-पाठन अधिक रुचिकर एवं आकर्षक बन गया है ई-शिक्षा के कारण ही भारत में ही नहीं विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में इंटरएक्टिव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग तकनीक अर्थात एक ही समय पर भिन्न-भिन्न परिसरों में बैठे हुए विद्यार्थियों को हिंदी सिाना, जहां हम उनको दे भी सकते हैं, उनसे बातचीत भी कर सकते हैं और वह भी बहुत वही वे भी वही सब कुछ कर सकते हैं, का प्रयोग किया जा रहा है।

आधुनिक युग के विद्यार्थी कंप्यूटर से लेकर वीडियो, मूवी, डीवीडी, इंटरनेट, ईमेल, सोशल मीडिया, टेक्स्ट मैसेजिंग और अनेकों एप्स जैसी आधुनिक प्रौद्योगिकियों में बहुत निपुण है। उनके पास डिजिटल दुनिया के माध्यम से 24 घंटे अपनी उंगलियों के जादू से दुनिया भर की खबरों का जान लेने की क्षमता मौजूद है। किसी भी भाषा का ज्ञान हासिल करने से पहले वे उस भाषा में उपलब्ध भाषिक एवं सांस्कृतिक तत्वों तथा स्त्रोतों को नई तकनीक में कितना उपलब्ध हो सकता है उसकी जांच पड़ताल करते हैं।

अमेरिका के शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को इन्हीं जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी यूनिवर्सिटी में वर्चुअल रियलिटी, 360 डिग्री विजुअलाइजेशन, ग्रीन स्क्रीन और 3-डी प्रिंटिंग जैसी नई प्रौद्योगिकियों का हिंदी भाषा साहित्य के शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग कर नई पीढ़ी के विद्यार्थियों में नई उमंग एवं आकर्षण पैदा किया गया है। 3

भाषा साहित्य के प्राध्यापकों को हमेशा यह ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि आधुनिक विद्यार्थियों की भाषा साहित्य में रुचि किस प्रकार बनाई जा सकती है। वर्तमान विद्यार्थी के पास पठन-पाठन की भरमार सामग्री है तथा अनगिनत क्षेत्र भी है लेकिन भाषा साहित्य में उनकी रुचि को बनाए रने अथवा विकसित करने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग आवश्यक है जिस पर अधिकांशत: महत्व नहीं दिया जाता। ई - शिक्षा के माध्यम से हिंदी के विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के रचनात्मक तत्वों जैसे ध्वनि और अर्थ, भाषा विज्ञान की क्षमता , वाक्यांश , वाक्यों का निर्माण, अनुच्छेद , कथोपकथन, प्रश्नोत्तरी, भारत की संस्कृति, रीति रिवाज संस्कार -परंपराएं, धर्म, त्योहार, चिंतन -मनन निष्पक्ष दृष्टिकोण के विषय में अनुभव प्रदान करवाया जा सकता है जिससे एक हिंदी भाषी विद्यार्थी भविष्य में विश्व के समक्ष आत्मविश्वास के साथ स्वयं को प्रस्तुत कर पाए सवैसे भी हिंदी विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है जिसकी यात्रा श्रुति, भोज पत्रों, ताड- पत्रों भित्ति- चित्रों, शिलालों, ताम्रपत्र आदि के रास्ते से होते हुए आज के डिजिटल युग में प्रवेश कर सतत प्रवाह मान रही है। हिंदी की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि के वर्णों का वर्गीकरण भी पूर्णत: तकनीकी दृष्टिकोण के साथ ही किया गया है। लीना मेहंदले ने इसी विषय में कहा था कि भारतीय मनीषियों ने पहचाना की वर्णमाला में विज्ञान हैं। ध्वनि के उच्चारण में शरीर के विभिन्न अवयवों का व्यवहार होता है। इस बात को पहचान कर शरीर विज्ञान के अनुरूप भारतीय वर्णमाला बनी और उसकी वर्गवारी भी तय हुई। यह वैज्ञानिकता आधुनिक तकनीकों से जुड़ी हुई है। वर्तमान में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जहां आधुनिक तकनीकों का प्रयोग ना किया जा रहा हो। नई तकनीकों का प्रयोग जहां किसी क्षेत्र की उपलब्धियों का परिचायक है, वही नई और पुरानी तकनीकों का समन्वय उस क्षेत्र के विकास एवं व्यापकता को भी सिद्ध करता है। इसी प्रकार जब किसी भाषा के अध्ययन की परंपरागत एवं आधुनिक तकनीकों में संबंध मधुर होता है तब वह भाषा अपने विकास के उच्चतम शिखर पर होती है। लेकिन इस संबंध में जैसे कि तनाव उत्पन्न होता है, वह भाषा ह्रास की ओर अग्रसर हो जाती है। अत: यह कहा जा सकता है कि हिंदी के विकास के लिए हिंदी भाषा तथा ई -शिक्षा के बीच समन्वय बहुत महत्वपूर्ण है। यह संबंध केवल हिंदी भाषा साहित्य तक ही सीमित नहीं होता बल्कि किसी भी संकाय क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली हिंदी भाषा तथा अन्य भाषाओं के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। वर्तमान में ई -शिक्षा के माध्यम से हिंदी भाषा का पठन-पाठन अवश्य ही फलेगा और फुलेगा क्योंकि ई-शिक्षा किसी भी विषय वस्तु की संपूर्ण जानकारी संपूर्ण जानकारी देने एवं प्रस्तुत करने का एक प्रभावशाली और मनोरंजक तरीका है। वास्तव में शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकी द्वारा लाए गए नवपरिवर्तन तथा तकनीकी विकास को अपनाना एवं उसे शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग करन अपने आप में एक सराहनीय कार्य है।

संदर्भ सूची:-

1. हिंदी एवं भारतीय संस्कृति - डॉ साकेत सहाय, भारत
2. हिंदी वेब और ऑनलाइन साहित्य - श्री रोहित कुमार हैप्पी न्यूजीलैंड।
3. अमेरिका में आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा हिंदी शिक्षण -डॉ नीलाक्षी फुकन,अमेरिका